P4 गमा जी कोई मिल नहीं सकती

प्रातः क्लास 25-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है"

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझा रहे हैं। पढ़ाई माना समझ। तुम बच्चे समझते हो यह पढ़ाई बहुत सहज और अ× बहुत ऊंची है। और बहुत ऊंच पद भी देने वाली है। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। यह पढ़ाई हम विश्व का मालिक बनने लिए पढ़ते हैं। तो पढ़ने वालों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कितनी ऊंची पढ़ाई है। यह वही गीता का एपीसुड भी है। संगम युग भी है। तुम बच्चे जागे हो बाकी सभी सोये पड़े हैं। गायन भी है माया के नींद में सोये पड़े हैं। तुमको बाप ने आकर जगाया है। सिर्फ एक बात पर समझाते हैं मीठे बच्चों याद की यात्रा की बल से अपने विश्व पर राज्य करो। जैसे कल्प पहले भी किया था। यह स्मृति बाप दिलाते हैं। बच्चे भी समझते हैं हम ने स्मृति पाई। कल्प2 हम इस योग बल से विश्व के मालिक बनते हैं। और फिर दैवी गुण भी धारण करनी होती है। याद पर ही मुख्य अटेन्शन देना है। इसलिए योगबल से तुम बच्चों में औटोमेटकली दैवी गुण आ जाती है। बराबर यह इम्तहान है ही मनुष्य से देवता बनने का। तुम यहां आये ही हो मनुष्य से देवता बनने लिए योगबल से। और यह भी समझते हो योगबल से सारे विश्व को भी पवित्र होना है। पवित्र थी। फिर अपवित्र बनी है। सारे चक्र के राज़ को तुम बच्चों ने समझा है। और दिल में भी है। भल कोई नया हो, तो भी यह बातें बिलकुल सहज से समझने की। तुम सो देवता पूज्य थे फिर पुजारी तमोप्रधान बने थे। और कोई ऐसा बता भी न सके। मनुष्य तो लम्बी-चौड़ी गपोड़े लगाते हैं। शास्त्रों में भी बहुत गपोड़े हैं। बाप क्लीयर समझाते हैं वह है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति पास्ट हो गई। पास्ट की बात को चितवो नहीं। वह तो गिरने की बातें हैं। बाप तो अभी चढ़ने की बातें सुना रहे हैं। बच्चे भी अच्छी रीत समझते हैं। हमको दैवी गुण जरूर धारण करनी है। रोज का चार्ट लिखना चाहिए। हम कितना समय याद में रहे, हम ने क्या2 भूलें की। भूल की रिश्ति फिर भारी चोट भी लगती है। उस पढ़ाई में भी कैसेटर्स देखी जाती है ना। इसमें भी कैसेटर्स देखी जाती है। बाबा तो तुम्हारे कल्याण के लिए ही करते हैं। उस में भी रजिस्टर रखते पढ़ाई का और कैसेटर्स का। यहां भी बच्चों को देवर कैसेटर्स बनाना है। भूलों की सम्भाल करनी है। देखना है मेरे से कोई भूल तो नहीं हुई। इसलिए यहां कचहरी भी होती है। और कोई स्कूल आद में कब कचहड़ी नहीं होती। अपने ही अन्दर से पूछना है। बाप ने समझाया है माया के कारण कुछ न कुछ अवज्ञाएं, चोरी-चकारी आद की भूलें होती रहती हैं। तुम बच्चों की कचहड़ी शुरू में भी होती थी। बच्चे सच्च 2 बताते थे। बाप समझाते रहते हैं अगर सच्च न बताया तो फिर वह भूलें वृधिको पाती रहेंगी। उल्टा और ही भूल का डन्ड मिल जावेगा। भूलें न बतलाने से फिर नाफरमान बरदारी का टीका लग जाता है। फिर राजाई का तिलक मिल न सके। आज्ञा नहीं मानते हैं, बेवफा बनते हैं तो राजाई पा नहीं सकते। सर्जन भिन्न2 प्रकार से समझाते रहते हैं। सर्जन से अगर बिमारी छिपाई तो फिर सफा कैसे मिलेंगी। माया कुछ न कुछ भूलें करा देती है। इसलिए सर्जन को तोफैरन बताना चाहिए। बाप तो हर बात समझाते रहते हैं। ऐसी2 माया बहुत तूफान लावेंगी। एकदम पाँ बारह कर माया उल्टा माथा कर देती है। कोई न कोई भल करा देती है। यहां तुम बैठे हो स्टोर× फुल पास होने लिए परन्तु माया तुमको बनने नहीं देती है। सर्जन से जितना छिपावेंगे तो पद भी कम हो जावेगा। सर्जन को बतलाने से कोई मार तो नहीं पड़ती है। बाप जरूर कहेंगे सावधान। फिर अगर ऐसी2 भूलें करेंगे तो नुकसान को प्राप्त पाते रहेंगे। पद भी कम हो जावेगा। यह भी अभी पता पड़ा है। जन्म-जन्मान्तर की बे हद की बादशाही अभी मिलती है× बाद दवारा। यह अभी मालूम हुआ है। वहां तो यह पता नहीं पड़ेगा कि अविनाशी बाप से यह अविनाशी पद पाया है। वहां तो नेचरल देवी चाल ही चलेंगे। यहां पुरुषार्थ करना है। पड़ो फेल नहीं होना है। बाप कहते हैं बच्चे भूलें जरूरी न करो। बाप बहुत ही प्यार का सागर है। बच्चों को बनना है। यथा बाप तथा बच्चे। यथा राजा रानी तथा प्रजा। बाबा तो राजा रानी है नहीं। तुम राजा रानी हो। बाबा हमको आप समान बनाकर है। बाप की जो महिमा करते हो: तुम्हारी भी होनी चाहिए। बाप समान बनना है। माया बड़ी प्रबल है। तु

रजिस्टर रखने नहीं देती। माया की फीते में तुम पूरे फंसे हुये हो। छोड़ती नहीं। माया की जेल से तुम निकल प्र सकते हो। सच्च बताते नहीं। नहीं तो बाप कहते हैं एक्सरेट याद का चार्ट रखो। सुबह भी उठ कर बाप को याद करो। बाप की ही महिमा करो। बाबा आप हमको विश्व का मालिकबनाते हैं तो हम आप की महिमा क्यों नहीं करें। भक्ति मार्ग में कितनी महिमा गाते हैं। उनको तो कुछ भी पता नहीं है। देवताओं की तो महिमा है नहीं। महिमा तो तुम ब्राह्मणों की ही है। सभी को सदगति देने वाला एक बाप ही है। वह क्रियटर है। तो डायरेक्टर भी है। सर्विस भी करते हैं। बच्चों को समझाते हैं। प्रैक्टीकल में कहते हैं। वह तो सिर्फ भगवानुवाच सुनते रहते थे शास्त्रों में। अभी तुम जो प्रैक्टीकल में सुनते हो वह फिर शास्त्रों में डालते हैं। बाकी शास्त्रों में सच्च तो है नहीं। गीता पढ़ते आते हैं फिर उस से मिलता क्या है। कितना प्रेम से बैठ पढ़ते हैं। भक्ति करते हैं। पता नहीं पड़ता कि इन से क्या होगा। यह समझते नहीं कि हम तो सीढ़ी नीचे ही उतरते रहते हैं। दिन-प्रति दिन तमोप्रधान बनना ही है। ड्रामा में नूंध ही ऐसी है। इस सीढ़ी का राज़ सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। शिव बाबा ही ब्रहमा द्वारा समझाते हैं। यह भी उन से समझ कर फिर तुमको समझाते हैं। जैसे तुम औरों को समझाते हो। मूल बड़ा सर्जन, बड़ा टीचर तो बाप है ना। उनको ही याद करना है। यह ऐसे नहीं कहते कि ब्रहमणों को याद करो। याद तो एक की ही रखनी है। कब भी कोई साथ मोह न रखना है। एक बाप से ही शिक्षा पानी है। निर्मोही बनना है। इसमें बड़ी मेहनत है। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। यह तो खत्म हुये पड़ी है। इन में लव वा आसक्ती कुछ नहीं है। कितने बड़े2 मकान बनाते हैं। उन्हों को तो यह पता नहीं है यहपुरानी दुनिया बाकी कितना समय है। तुम बच्चे अभी जागे हो। औरों को भी जगाते हो। बाप कहते हैं अभी जागो। आत्माओं को ही जगाते हैं। घड़ी2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो। शरीर समझते हो तो जैसे कि सोये पड़े हो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। आत्मा पावन है तो शरीर भी पावन मिलता है। बाप समझाते हैं तुम ही इस देवी देवता धराने के थे। फिर तुम ही बन जावेंगे। कितना सहज है। ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करेंगे। सवेरे सुबह को भी उठ कर बैठ बाप को याद करो। बाबा आप की तो कमाल है। आप हमको कितना ऊंच देवी-देवता बनाते हो। हमको बना कर फिर आप निर्वाणधाम में बैठ जाते हो। इतना ऊंच तो और कोई बना न सके। आप कितना सहज कर बतलाते हो। बाप कहते हैं जितना टाईम ले काम काज करते हुये भी तुम बाप को याद कर सकते हो। बाबा ही तुम्हारा बेड़ा पार करने वाला है। कलियुगी वेश्यालय से उस पार सतयुगी शिवालाय में ले जाते हैं। शिवालय को भी याद करना है। शिव बाबा का स्थापना किया हुआ स्वर्ग। तो दोनो की याद आ जाती है। शिव बाबा को याद करने से हम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। यह पढ़ाई है ही नई दुनिया के लिए। बाप नई दुनिया स्थापन करने आते हैं। जरूर बाप आकर कोई तो कर्तव्य करेंगे ना। तुम देखते भी हो मैं पार्ट बजा रहा हूं। ड्रामा के प्लैन अनुसार। तुम बच्चों को 5000वर्ष पहले वाली याद की यात्रा और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाता हूं। तुम भी समझते हो बाप हर 5000वर्ष बाद सम्मुख आते हैं। आत्मा ही बोलती है। शरीर तो नहीं बोलेगी। बाप बच्चों को बैठ शिक्षा देते हैं। आत्मा को पावित्र बनाना है। आत्मा को प्युर होना एक बार ही होता है। आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मैं ने अनेक बार तुमको पढ़ाया है। फिर पढ़ावेंगे। ऐसे और कोई सन्यासी आदि कह न सके। बाप ही कहते हैं बच्चों मैं ड्रामा के प्लैन अनुसार पढ़ाने आता हूं। फिर 5000वर्ष बाद आकर ऐसे ही पढ़ाऊंगा। जैसे कल्प पहले तुमको पढ़ा कर राजधानी स्थापन की थी। अनेक बार पढ़ा कर तुमको राजधानी दी है। यह कोई नई बात नहीं। कितना बार तुम पढ़े हो। यह कैसी वन्डरफुल बातें बाप सुनाते हैं। श्रीमत श्रीभुत श्रीभत। कितनी श्रेष्ठ है। ऊंच ते ऊंच बाप ही है। उनके श्रीमत से हम श्रेष्ठ अथवा विश्व का मालिकबनते हैं। बहुत2 बड़ा

मतलब है। कोई कोई को बड़ा लाटरी देख माथ ही खराब हो जाता है। होपलेस हो जाते हैं। हम नहीं चढ़ सकते। हम विश्व की बादशाही कैसे लेंगे। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं अति इन्द्रिय सुख खुशी की बात इन्होंने सेपूछो। तुम जहाँ भी जाते हो खुशी की ही बातें सुनाते हो। तुम ही दैव के मालिक थे फिर 84 जन्म भोग गुलाम बन गये हो। गाते हैं ना मैं गुलाम मैं गुलाम तेरा। समझते हैं अपन को नीच कहना ठीक हो चलना है। देखो बाप कौन है उनको कोई भी जानते नहीं हैं। अभी तुम ने जाना है। बाप कैसे है आकर बच्चा2 कह कर समझाते हैं। हमारी आत्मा को कहते हैं। आत्मा को बाप को याद करना है यह आत्मायें और परमात्मा को मेला है। उन से ही स्वर्ग की बादशाही मिलती है। बाकी गंगा स्नान से कोई स्वर्ग की बादशाहीयाँ ही मिलती है। गंगा स्नान तो बहुत बारी किया है। यूँ तोपानी सारा सागर से ही आता है। कई अनपढ़े बच्चों को यह भी पता नहीं है। कैसे यह सभी चलता है। बरसात कैसे पड़ती है यह भी कुदरत ठहरी ना। तो इस समय तुमको बाप सभीसमझाते रहते हैं। कैसी कुदरत है। तो बाप आत्माओं को सुनाते हैं। धारणा भी आत्मा में ही होगी। न कि शरीर में। तुम को भक्ति मार्ग उल्टा लटकाये एकदम ढल्लू बना दिया है। अभी बाबा ने समझाया है तुम भी फील करते हो हमको माया ने एकदम उल्टा लटकाये दिया था। कितने बेसमझ बन जाते हैं। बाप हमको क्या से क्या बना देते हैं। अभी बाप कहते हैं अपन पर रहम करो। बाप की अवज्ञा न करो। देह अभिमानी मत बनो। मुफ्त अपना पद कम कर देंगे। टीचर तो समझावेंगे। जानते हैं मैं बेहद का टीचर हूं। दुनिया में भाषायें भी कितने हैं। कोई भी चीज़ छपती है तो सभी भाषाओं में छपाने का किया जाता है। कोई भी कुछ लिटरेचर आदि छपाते हैं तो एक2कापी सभी कोभेज देनी चाहिए। एक एक कापी लाईब्रेरी में,भी भेज देनी चाहिए। खर्चा की तो बात ही नहीं। बाबा फराक दिल दिखाते रहते हैं। शिव बाबा का खज़ाना बहुत भर जावेगा। फिर कोई से लेंगे भी नहीं। कहेंगे अभी अपने पास रखो। बच्चों की बुधि माना धन की बुधि। खर्चे की बुधि। फिर तंग नहीं होंगे। सावलसाह को हुण्डी भी भरने वाला बैठा है। तुम खर्चा करते रहो। बाप कहते हैं कुछ भी छपाओ तो सभी सेन्टर्स पर ऐक एक कापी भेज दो। हर्जा नहीं है। सेठ लोग होते हैं तोगुमासते खाता ले आते हैं यह कम पड़ता है यह पैसा नहीं देते हैं। कहेंगे अच्छा हमारे खाते लिख दो। इनका मिटा दो। किसको तंग मत करो। पैसा रख कर क्यों करेंगे। घर तो नहीं ले जावेंगे। घर ले जाये तो परमात्मा की यज्ञ की चोरी हो जाये। तो बा-तो-बा। ऐसी बुधि सिकल किसकी न हो। परमपिता परमात्मा की यज्ञ की चोरी। कर के उन जैसा महानपरमात्मा कोई कोई हो न सके। कितनी अधम गति हो जावेगी। बाप कहते हैं यह भी सभी का ड्रामा में पार्ट है। भल खावे-पीवे तुम जाकर राजाई करेंगे वह जाकर तुम्हारे नोकर बनेंगे। नौकर विगर तुम्हारी राजाई कैसे चलेगी। वह ऐसी ही तुम्हारे सर्वेन्ट बनेंगे। राजाई ऐसे ही स्थापन होनी है। कल्प पहले भी ऐसे ही स्थापन हुई थी। बाप कहते हैं अगर अपना कल्याण करना चाहते हो तो अभी श्रीमत पर चलो। दैवी गुण भी धारण करो। क्रोध करना दैवी गुण नहीं है। वह आसुरी गुण हो जाता है। कोई क्रोध करे तो चुप कर देना चाहिए। रेसपान्स न करना चाहिए। हरेक की चलन से समझ सकते हैं। अवगुण तो सभी में हैं। जब कोई क्रोध करते हैं तो उनकी शक्ल सिकल ही टामी जैसी हो जाती है मुख से बम चलाते हैं। अपना ही नुकसान करते हैं। पद भ्रष्ट हो जावेगा। समझ होनी चाहिए ना। तब ही बाबा कहते हैं जो भी पाप-कर्म करते हो लिख कर दो। बाबा कोई बताने से माफ कर देंगे। बोझा हल्का हो जावेगा। जन्म-जन्मान्तर से तुम विकार में जाने लगे हो। इस समय तुम कोई भी पाप-कर्म करेंगे तो वह सोणा बन जावेगा। बाप के आगे भल की तो सोणा डन्ड पड़ जावेगा। किया और फिर बताया नहीं और ही बुधि होती जावेगी। और अपने ही सत्यानाश कर देते हैं। बाप तो समझावेंगेअपनी सत्यानाश न करो। बाप तुम बच्चों की बुधि सालम बनाने आये हैं। जानते हैं यह कसे पद पावेंगे। वह भी 21 जन्मों की बात है। जो सर्विस एवुल क

2-4-68

बच्चे हैं, स्वभाव बहुत ही मीठा होना चाहिए। कोई तो झट बाप को बतलाते हैं आज यह भूल हुई। बाबा खुश होते हैं। भगवान खुश हुआ और क्या चाहिए। यह तो बाप टीचर गुरु तीनों ही है। नहीं तो तीनों ही नाराज होंगे। तीनों को राजी करना है। कहा जाता है ना बड़ों को अदब से देखना चाहिए। गुसताकी नहीं। बाप कहते हैं मैं आता हूं तुमको पावन बनाने। फिर गुसताखी करते हो। तो क्या हाल होगा। बाप बहुत ही प्यार से समझाते हैं। अपना अकल्याण क्यों करते हो। श्रीमत पर चलो। खान-पान तो सभी को मिलता ही है। तुमको आलमाईटी बाबा ने छाछ और डोडा खिलाया था। देखूं जबान कहां खिट-पिट तो नहीं करती है। छाछ और बाजरे का डोडा था। अभी को बाजरी दो तो माथा ही खराब हो जाये। बाबा ने सभी को खिलाया था। देखें मेरी डायेक्शन पर चलते हैं। बाबा ने तो छोटेपन में डोडा और मक्खन बहुत खाया है। तुमको तो मक्खन नहीं मिल सकता था। अभी तो देखो बाप कहते हैं जो चाहो सो खा सकते हो। परन्तु कोई आदम न पड़ जावे। भोजन तो बहुत अच्छा मिलता है। गुड़ की चाय थोड़े ही पिलाते हैं। बच्चे बुधि को पाते रहते हैं। बाबा कहेंगे दरकार नहीं है। शिव बाबा का भण्डारा भरपूर है। बहुत बच्चे कहते हैं बाबा मोटर भेज दें। बाबा लिखते हैं खिट2 होगी। याद में रह न सकेंगे। राईट हैंड तो चले गये। सभी कामइन(बाबा)पर आकर पड़ा है। जबतक कोई ऐसा लायक निकले। "मम्मा जैसी लायक अभी तक कोई थोड़े ही मिला है। यहां मिल ही नहीं सकता। उस गवर्मेन्ट तो मैं तो एक जाता है, दूसरा जगह भर लेते हैं। यहां तो ऐसे हो नहीं सकता। तो सभी ख्यालात इन पर आ जाते हैं। सभी की सर्विस होनी चाहिए। कहां भी डिस सर्विस नहीं होनी चाहिए। फिर भी ड्रामा ही ड्रामा कहा जाता। जो कुछ हुआ ड्रामा। चिन्तन क्यों करें। जो होनी थी सो हो गई। बच्चों को भी ड्रामा पर खड़ा होना है। ड्रामा चलता रहता है उनको देखते चलो। मोह जीत भी बनना है। अभी नई दुनिया में जाना है। पुराने बन्धन को भूलते जाओ। घर में रहो भले। बच्चे आदमी सम्भालो, प्यार करो। दिल में एक बाप ही याद रहे। नये सम्बन्ध को ही याद करते रहो। गृहस्त व्यवहार में रहते मामेकं याद करो। तो वर्सा भी याद पड़ेगा। कितना प्यार से पढ़ाते हैं। हाथ में कोई लकड़ी आद नहीं। कभी ऐसी कोई खराब अक्षर नहीं निकालते हैं। बच्चे तो बहुत गन्दे2 अक्षर निकालते हैं। पीटते रहते हैं। बाप समझाते जाते इनका भी कोई दोष नहीं है। बच्चे चर्चे की बात दिल में नहीं किया जाता है। चर्चे अपने को कोई चर्चा समझते थोड़े ही हैं। वह अपने को तो सब से अच्छा समझते हैं। अभी तुम बाप के सामने आये हो। तो भूलो मत। बाप दैवी गुण धारण कराते हैं। ऐसे नहीं कि सभी सम्पूर्ण बन जावेंगे। बहुत ही प्यार से समझाया जाता है। गुस्से से कोई को समझाने से वह भी गुस्सा में आ जावेगा। बहुत2 मीठा बनो। जो देख कर सभी खुश हो जाये वाह यहां तो जैसे स्वर्ग में आये हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाहर में जाने से किसको वैल्यु नहीं रहती। नये2 को ले आते हैं। वह समझ नहीं सकते हैं। इसलिए बाहर जाना ही छोड़ दिया है। कोन कुबुकवसों से बात करेंगे। सभी को बाप के आगे लाने का लायक भी बनाना है। हम किसके पास जाते हैं। हम परमपिता परमात्मा बेहद का बाप से बेहद का वर्सा लेने जाते हैं। कब भी पतित नहीं बनेंगे। प्रतिज्ञा पक्की करे तब ही ले आना चाहिए। इम्तहान होने से आगे ही अपने चलन को सुधारो। नहीं तो फिर पीछे बहुत पछताना पड़ेगा। रिजल्ट आउट तो जरूर होनी ही है। छी2 आदतें मिटा दो। मुफ्त में घाटा न खाना चाहिए। इसलिए खबरदार होशियार। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

डायेक्शन

****** नर्कवासी के हो या स्वर्ग वासी के हो, वाले पर्चे बाप दादा के डेक्शन से बम्बई में छपाया गया है जिसको चाहिए वह गामदेवी सेन्टर से मंगा सकते हैं। और चाहिए तो अपने2 खर्चे से अपनी2 भाषा में छपा सकते हैं। अच्छा

**: : ओमशान्ति: : **